إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَٱلَّذِينَ هَادُواْ وَٱلنَّصَٰرَىٰ وَٱلصَّٰبِـِٔينَ مَنْ
ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْأَخِرِ وَعَمِلَ صَٰلِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ
رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا
مِيثَٰقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ ٱلطُّورَ خُذُواْ مَآ ءَاتَيْنَٰكُم
بِقُوَّةٍ وَٱذْكُرُواْ مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّيْتُم مِّنۢ
بَعْدِ ذَٰلِكَ ۖ فَلَوْلَا فَضْلُ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُۥ لَكُنتُم مِّنَ
ٱلْخَٰسِرِينَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ ٱلَّذِينَ ٱعْتَدَوْاْ مِنكُمْ فِى
ٱلسَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُواْ قِرَدَةً خَٰسِـِٔينَ ﴿٦٥﴾ فَجَعَلْنَٰهَا نَكَٰلًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٦٦﴾ وَإِذْ قَالَ
مُوسَىٰ لِقَوْمِهِۦٓ إِنَّ ٱللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَن تَذْبَحُواْ بَقَرَةً ۖ قَالُوٓاْ
أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ۖ قَالَ أَعُوذُ بِٱللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ ٱلْجَٰهِلِينَ
﴿٦٧﴾ قَالُواْ ٱدْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِىَ ۚ قَالَ إِنَّهُۥ يَقُولُ إِنَّهَا
بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌۢ بَيْنَ ذَٰلِكَ ۖ فَٱفْعَلُواْ مَا
تُؤْمَرُونَ ﴿٦٨﴾ قَالُواْ ٱدْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا لَوْنُهَا ۚ قَالَ إِنَّهُۥ
يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ ٱلنَّٰظِرِينَ ﴿٦٩﴾ قَالُواْ
ٱدْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِىَ إِنَّ ٱلْبَقَرَ تَشَٰبَهَ عَلَيْنَا وَإِنَّآ
إِن شَآءَ ٱللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿٧٠﴾ قَالَ إِنَّهُۥ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُولٌ
تُثِيرُ ٱلْأَرْضَ وَلَا تَسْقِى ٱلْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيهَا ۚ قَالُواْ
ٱلْـَٰٔنَ جِئْتَ بِٱلْحَقِّ ۚ فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُواْ يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾

Theme	
Real believers have nothing to fear or to regret. Israelites covenant with Allah. Punishment for the violation of Sabbath. Israelites attitude in sacrificing a cow on Allah's command.	हक़ीक़ी अहल-ए-ईमान के लिए न कोई ख़ौफ़ है और न किसी बात का रंज। बनी इस्राईल का अल्लाह से किया हुआ अहद। सब्त (हफ़्ता) की ख़िलाफ़वर्ज़ी पर सज़ा। अल्लाह के हुक्म पर गाय ज़बह करने के मामले में बनी इस्राईल का रवैय्या।
Tarjumani	
Surely, those who believed and those who were Jews, Christians or Sabians (before the advent of Prophet Muhammad) - those among them who believed in Allah and the Last Day and performed good deeds - will be rewarded by their Rabb; they will have nothing to fear or to grieve. Remember, O Children of Israel when We took a covenant from you and when We lifted the Mount (Toor) over your heads saying: "Hold firmly to what We have given you (Torah) and follow the commandments therein, so that you may become pious. But even after that you backed out;	यक़ीन जानो कि नबी-ए-अरबी को माननेवाले हों या यहूदी, ईसाई हों या साबी, जो भी अल्लाह और रोज़े-आख़िर पर ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा, उसका अज्र उसके रब के पास है और उसके लिए किसी खौफ़ व रंज का मौक़ा नहीं है	याद करो वह वक़्त, जब हमने तूर को तुमपर उठाकर तुमसे पुख्ता अहद लिया था और कहा था कि "जो किताब हम तुम्हें दे रहे हैं उसे मजबूती के साथ थामना और जो अहकाम व हिदायत इसमें दर्ज हैं उन्हें याद रखना	इसी ज़रीए से तवक्को की जा सकती है कि तुम तक़वा की रविश पर चल सकोगे |" मगर इसके बाद तुम अपने अहद से फिर गए	इसपर भी अल्लाह के

if there would not have been the Grace and Mercy of Allah upon you, you surely would have been among the losers. You very well know the story of those of you who transgressed in the matter of the Sabbath; We ordered them: "Be detested apes" Thus, We made them an example to their own people and to succeeding generations, and a lesson to those who are God-conscious. Remember, when Musa (Moses) said to his people: "Allah commands you to sacrifice a cow," they replied, "do you ridicule us?" Musa answered, "I seek the protection of Allah from being one of the ignorant." "Request your Rabb," they said, "to give us some details of that cow." Musa replied: "Allah says, the cow should neither be too old nor too young but of middle age;" do, therefore, what you are commanded! "Request your Rabb again" they said, "to clarify for us her colour." Musa replied: "Allah says, the said	फज्ल और उसकी रहमत ने तुम्हारा साथ न छोड़ा, वरना तुम कभी के तबाह हो चुके होते	फिर तुम्हें अपनी कौम के उन लोगों का किस्सा तो मालूम ही है जिन्होंने 'सब्त' का क़ानून तोडा था	हमने उन्हें कह दिया कि बन्दर बन जाओ और इस हाल में रहो कि हर तरफ़ से तुमपर-धुतकार-फिटकार पड़े	इस तरह हमने उनके अंजाम को उस ज़माने के लोगों और बाद की आनेवाली नस्लों के लिए इबरत और डरनेवालों के लिए नसीहत बनाकर छोड़ा	फिर वह वकिआ याद करो, जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि अल्लाह तुम्हें एक गाय ज़बह करने का हुक्म देता है	कहने लगे, "क्या तुम हमसे मज़ाक करते हो?" मूसा ने कहा, "मैं इससे ख़ुदा की पनाह माँगता हूँ कि जाहिलों कि-सी बातें करूँ |" बोले, "अच्छा, अपने रब से दरखास्त करो कि वह हमें इस गाय की कुछ तफ़सील बताए |" मूसा ने कहा, "अल्लाह का इरशाद है कि वह ऐसी गाय होनी चाहिए जो न बूढ़ी हो न बछिया, बल्कि औसत उम्र की हो	लिहाज़ा जो हुक्म दिया जाता है उसकी तालीम करो |" फिर कहने लगे, "अपने रब से यह और पूछ लो

cow should be of a rich and deep yellow colour pleasing to the eyes." Again they said: "Request your Rabb to clarify for us the exact type of cow she should be, because to us all cows look alike; if Allah wills, we shall be rightly guided." Musa replied: "Allah says, the said cow should have neither been used to till the soil nor water the fields; a healthy one, free from blemish with no spot on her." "Now you have brought us the accurate description," they said. Then they slaughtered her, after they had almost declined.	कि उसका रंग कैसा हो"? मूसा ने कहा, "वह फ़रमाता है कि ज़र्द रंग की गाय होनी चाहिए जिसका रंग ऐसा शोख हो कि देखनेवालें का जी ख़ुश हो जाए |" फिर बोले, "अपने रब से साफ़-साफ़ पूछकर बताओ कि कैसी गाय मतलूब है, हमें इसके तअय्युन में इश्तिबाह हो गया है	अल्लाह ने चाहा तो हम उसका पता पा लेंगे |" मूसा ने ज़वाब दिया, "अल्लाह कहता है कि वह ऐसी गाय है जिससे ख़िदमत नहीं ली जाती, न ज़मीन जोतती है, न पानी खींचती है, सही-सालिम और बेदाग है |" इसपर वे पुकार उठे कि हाँ, अब तुमने ठीक पता बताया है	फिर उन्होंने उसे ज़बह किया, वरना वे ऐसा करते मालूम न होते थे	
Tafsir	